उन्मेष

(६)

श्रीश्रीमाँ द्वारा सत्संग – (१७/०९/०८)

विषय – तीर्थस्थानों का महात्म्य

तीर्थस्थानों का 'श्री' या माधुर्य है 'महात्मा' एवं देवता का मन्दिर और विश्व का 'श्री' या माधुर्य है विश्वप्रकृति का सौन्दर्य। प्रत्येक महात्मा की देह ही देवता के मन्दिर स्वरूप है। महात्माओं के दर्शन से ही तीर्थ दर्शनानुभव सार्थक होते हैं। महात्मागणों की कृपा से ही तीर्थस्थानों के महात्म्य की उपलब्धि होती है। तीर्थस्थानों में महात्मा परोक्ष में अवस्थान करते हुए साधकों को आध्यात्मिक मार्ग में सहायता प्रदान करते हैं।

अपने साधनारत जीवन की शुरुआत में मैं 'पुरी' गई। वहाँ अवस्थान करते समय एकदिन सुबह जब मैं आध्यात्मिक चेतना के गभीरध्यान में मग्न थी, तब हजारीबाग के सन्त सीताराम अन्धेबाबा ने मुझे दर्शन दिये और मुझे श्रीश्री जगन्नाथ महात्म्य से अवगत कराया। उससमय पूरे दिन मेरे साथ कई आलौकिक घटनाऐं घटी। जीवनमुक्त, नित्यमुक्त महात्मा श्रीश्री अन्धेबाबा की असीम अनुकम्पा से श्री श्री जगन्नाथ-बलराम-सुभद्रा के यौगिक तत्त्व का अर्थ उससमय मुझे हृदयंगम हुआ था। फिर श्री जगन्नाथ मन्दिर के दर्शनार्थ जब मैं मन्दिर के सामने की दुकानों के पास रास्ते पर खड़ी थी तभी एक भिखारी मेरे पास आया और मुझसे भिक्षा याचना करने लगा। भिखारी के हाथों की अंगुलियों पर कुष्ठरोग वीभत्सरूप में दिखाई दे रहा था। पहले मेरे मन में थोड़ा घृणाभाव आया किन्तु दुसरे ही क्षण मेरे अन्तर से आवाज सुनाई दी 'मन में घृणा भाव रहने से भगवत् दर्शन नहीं मिलेंगे, किसी दिन भी नहीं, कभी भी नहीं!' इस आवाज ने विद्युत की चमक के समान मुझे चौंका दिया और यह बात मन में आते ही मैं भिखारी के मुख की ओर ताकने लगी एवं उसका हाथ पकड़ने गई तो देखा कि वह मेरी ओर ताक रहा है। मेरे हाथ पकड़ते ही झटके से उसने अपना हाथ छुड़ाया और भीड़ में भाग गया एवं मेरी आँखों से ओझल हो गया। एक क्षण में ही वह पता नहीं कहाँ अदृश्य हो गया। उससमय तभी मुझे उपलब्धि हुई, ''मुझे 'श्रीजगन्नाथ' के प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त हुए है।'' श्री जगन्नाथ ने मेरे अन्तर से घृणाबोध हमेशा के लिए अपसारित कर दिया। भगवान श्री चैतन्यदेव ने इस पुरी तीर्थ में ही कुष्ठरोगी को गले लगाया और अपने स्पर्श से उसे स्वस्थ कर दिया था। भगवान के महानुभव की ये सब बातें उससमय मैं मनन करने लगी। तत्पश्चात् 'गम्भीरा' में महाप्रभु को प्रणाम करने गई।

(श्रीश्रीमाँ सर्वाणी द्वारा रचित बंगला ग्रंथ 'उन्मेष' से उद्धृत)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती सुशीला सेठिया